Patrika (Indore), 17th November 2019, Patrika Plus, Page-15

इंदौर, 17.11.2019

SUNDAY पत्रिका PLUS

अभिनेत्री रसिका दुग्गल का कहना है कि उन्हें संवेदनशील पटकथाएं अच्छी लगती हैं, जिन पर काम करना उन्हें पसंद है।

citylive . 16 | citylive . 17 | screenplay . 18

PATRIKA.COM/ENTERTAINMENT

IIT INDORE CONVOCATION...

आने वाली पीढ़ी के लिए भी बचाए रखना है प्रकृति : कार्गेल

प्लेनेटरी साइंस इंस्टिट्यूट (यूएसए) के डॉ. कार्गेल ने इंजीनियर्स को दी डिग्री

राहुल चौधरी को प्रेसीडेंट ऑफ इंडिया गोल्ड मेडल

पत्रिका PLUS रिपोर्टर

इंदौर ● अपने फायदे के लिए हमने प्रकृति का खूब दोहन किया। अब तक जो नुकसान पहुंचाया उसकी भरपाई की जिम्मेदारी भी हमारी है। हम लोग विकास के साथ-साथ देशभक्ति के नाम पर भी बाउंड्री बनाकर आपस में लड़े जा रहे हैं। ऐसे हथियार इस्तेमाल होने लगे जिससे जिंदगी के साथ प्रकृति को नुकसान पहुंच रहा है। हमें यह प्रकृति न सिर्फ अपने लिए बचाना है, बल्कि हमारे बच्चों और उनके बच्चों के लिए भी बचाए रखना है।

यह बात प्लेनेटरी साइंस इंस्टिट्यूट (एरिजोना, यूएसए) के साइंटिस्ट डॉ. जेफ्री एस. कार्गेल ने शनिवार को इंडियन इंस्टिट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी (आइआइटी), इंदौर के सातवें दीक्षांत समारोह में बतौर मुख्य अतिथि कही। डॉ. कार्गेल ने स्टूडेंट्स को समाज और प्रकृति के हित में भी काम करने के लिए कहा। आइआइटी इंदौर बोर्ड ऑफ गवर्नर के चेयरमैन दीपक बी. फाटक और डायरेक्टर प्रो. प्रदीप माथुर ने भी विद्यार्थियों को संबोधित किया। समारोह में 108 बीटेक, 29 एमटेक, 55 एमएससी और 85 पीएचडी डिग्री की घोषणा की गई। ओवरऑल परफॉर्मेंस के लिए बीटेक पासआउट राहुल चौधरी को प्रेसीडेंट ऑफ इंडिया गोल्ड मेडल से सम्मानित किया। कम्प्यूटर साइंस टॉपर अपूर्वा जोशी, इलेक्ट्रिकल इंजीनियरिंग टॉपर भोले आशीष किरण व मैकेनिकल इंजीनियरिंग टॉपर बी. हितेश, एमएससी कैमस्ट्री टॉपर वनिथा रेड्डी और मयंक शर्मा को सिल्वल मेडल दिया। बेस्ट ऑल राउंड स्टूडेंट का खिताब विनीत हरेश और बेस्ट वुमन स्टूडेंट अवॉर्ड वनिथा रेड्डी ने हासिल किया।

दीक्षांत समारोह के बाद पास आउट स्टूडेंट्स ने इस अंदाज में अपनी खुशी का इजहार किया।

विनिथा को सम्मानित करते चेयरमैन फाटक, डॉ. कार्गेल व डायरेक्टर प्रो. माथुर।

फिर न जाने कब मिलना होगा, इस मौके को सेल्फी के जरिए यों किया कैद।

वैल्थ और फेम की रेस में ध्यान रहे एथिकल वैल्यूज

चेयरमैन दीपक बी. फाटक ने कहा, आप में से कई लोगों को उपनिषद् की जानकारी होगी। तब शिक्षा के लिए गुरुकुल हुआ करते थे। तब से अब तक शिक्षा का मूल सत्य और धर्म ही है। आप लोगों ने आइआइटी में आने से पहले से अब तक खूब मेहनत की। दूसरों से ज्यादा मार्क्स लाने और रेस जीतने के लिए हर कोशिश की। आगे वैल्थ और फेम की रेस होगी। इसमें एथिकल वैल्यूज से कोई समझौता नहीं होना चाहिए। नहीं तो आप रेस जीतकर भी गिल्टी फील करेंगे। आपके कंधे पर एक और जिम्मेदारी है। देश चाहता है कि आप जिस भी क्षेत्र में काम करें, उसमें लीडर बनें, क्योंकि 4 मिलियन टेक्निकल डिग्री पासआउट के बीच चुनिंदा ही आइआइटीयन हैं। आपके नाम के साथ अब आइआइटीयन भी जुड़ चुका है, इसलिए इस जिम्मेदारी को गंभीरता से लें। मैं प्रो. माथुर को संस्थान में अच्छा रिसर्च माहौल निर्मित करने के लिए बधाई देता हूं। डायरेक्टर प्रो. माथुर ने संस्थान की एनुअल रिपोर्ट पेश की।

चुनौतियां थी, अच्छा माहौल मिला

पिता ओमप्रकाश, मां आभा और छोटी बहन अनुप्रीति के साथ राहुल।

गोल्ड मेडलिस्ट राहुल चौधरी ने कहा कि पहले ही अटैम्प्ट में आइआइटी इंदौर में पसंदीदा ब्रांच (कम्प्यूटर साइंस) में एडमिशन का मौका मिल गया। मेरा सफर बहुत शानदार रहा है। नया आइआइटी होने के कारण यहां चुनौती के साथ-साथ संभावनाएं भी थी। पढ़ाई के दौरान बहुत अच्छा माहौल मिला और कई कमेटी से शुरुआती दौर में जुड़ने का मौका मिला। बीटेक करने के बाद कैंपस प्लेसमेंट से मिली कंपनी में जॉब करूंगा। कुछ समय बाद पीजी जरूर करूंगा।

मेरी नजर में सफल रहा चंद्रयान मिशन

समारोह के बाद चर्चा में प्रो. कार्गेल ने भारत के चंद्रयान मिशन पर विस्तार से चर्चा की। उन्होंने कहा, मेरी नजर में यह मिशन सफल रहा है। भारत ने सफलतापूर्वक वह कारनामा कर दिखाया जो बाकी लोगों की सोच से भी दूर है। ऑर्बिटर तो कक्षा में पहुंच ही चुका है। बेहतर होगा कि हम इसके असफल पहलू की जगह सफल हुए पहलू को देखें। प्रो. कार्गेल मंगल ग्रह को लेकर रिसर्च कर रहे हैं। उन्होंने कहा, कई लोगों का मानना है कि मंगल पर जीवन है। मेरा मानना है कि वहां जीवन की संभावना नगण्य है। अभी तक जो रिसर्च हुई है, उससे अंदाजा भी नहीं लगाया जा सकता कि मंगल पर जीवन कब तक संभव होगा।

छोटे-छोटे प्रयास से बदल सकते है सूरत

डॉ. कार्गेल ने कहा, एक इंसान पूरी दुनिया नहीं बचा सकता लेकिन, हर कोई थोड़ा प्रयास करे तो फायदा मिल जाएगा। नेपाल की शिलशिला आचार्य के उदाहरण से बताया, कैसे छोटे-छोटे प्रयासों से सूरत बदली जा सकती है। शिलशिला ने प्लास्टिक मुक्त पर्यावरण के लिए प्लास्टिक की थैलियों की जगह कॉटन के थैले अपनाने की पहल की। इस काम में अब 1260 महिलाएं उनके साथ जुड़ी हैं। इससे एक ओर प्रकृति संवर रही है, वहीं दूसरी ओर महिलाओं को भी रोजगार मिला। ऐसे इनिशिएटिव आप लोगों को भी लाना चाहिए।

और अधिक फोटो देखें

आइआइटी दीक्षांत समारोह से जुड़े अन्य फोटो देखने के लिए पत्रिका के फेसबुक पेज पर जाएं- fb/patrikaindore